- यह पौधों के विकास मे सहायक होता है तथा मिट्टी के दूसरे फायदेमंद सूक्ष्म जीवों को भी प्रेरित करता है।
- यह प्रबंधन प्रयोग करने में आसान है तथा रसायनों की अपेक्षा मनुष्यों पर भी बुरा असर नहीं डालता।
- इसे बाजार में उपलब्ध अन्य बायोफोर्मूलेषन के साथ भी काम में लाया जा सकता है।

भाकृअनुप
ICAR

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करे
निदेशक
भा.कृ.अनु.प–केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बॉक्स नंरू१८१, पोर्ट ब्लेयर ७४४१०३
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह

Design & Printed at Mahesh Graphics, Junglighat
Tel.: 03192 - 233521, Mob: 9434260944 | pressandamanyugam@gmail.com

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में सब्जियों मे उखटा रोगप्रबंधन के लिए केयारी - बायोकोन्सोरशिया

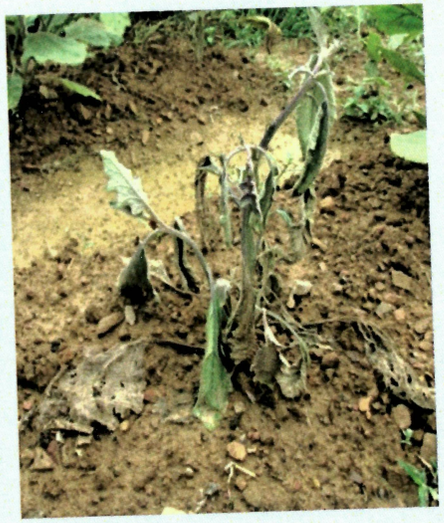

के. सक्तिवेल
आर. के. गौतम
पी. के. सिंह
रीना सिंह
अर्चना शर्मा
एस. दाम रॉय

2017

भाकृअनुप
ICAR

केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान
अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह

CIARI
ICAR
तमसो मा ज्योतिर्गमय

प्रस्तावना

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह मे बैंगन, टमाटर तथा मिर्ची इत्यादि सब्जियों की खेती बड़े पैमाने में की जाती है । रालस्टोनिया सोलेनेसियारम जो उखटा रोग का कारण है, इन सब्जियों में बहुत अधिक हानि पहुँचाता है । प्रत्येक वर्ष इस बीमारी के कारण फसलों में 50% तक उपज घट जाती है । अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह की जलवायु में 3000 मि.मी. से अधिक वर्षा तथा 80% तुलनात्मक आर्दता होती है जो की इस बैक्टेरियल पादप रोगाणु के विकास के लिए वर्ष भर अत्याधिक हितकारी हैं।

उखटा रोग के लक्षण

1) प्रभावित पौधों का अचानक मुरझा जाना जिसमे तरुण पत्तियाँ एवं अंकुर लटक जाते हैं।
2) तनें व जड़ का रोग ग्रसित हिस्सा भूरे बदरंग का हो जाता है । ग्रसित पौधों के कटे तने को साफ पानी में डुबाते हैं तो दूधिया सफेद रंग का बहाव निकलता हुआ दिखाई देता है ।
3) पौधों के बढ़ने की सभी अवस्थाओं में लक्षण देखे जा सकते हैं।

Tomato Chillies Brinjal

केयारी बाइयोकोन्सोरर्शिया को प्रयोग करने की विधि

बायो एजेंट को खेत की तैयारी से लेकर फसल की तुड़ाई की अवस्था तक पादप रोग प्रबंधन व अधिक उपज प्राप्ति के लिए प्रयोग मे लाया जाता है। इस्तेमाल मे लाने के चार निम्नलिखित तरीके है ।

1) मिट्टी में मिलाना :

एक किलोग्राम बाइयोकोन्सोरर्शिया को 50 किलोग्राम अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद मे अच्छे से मिलाएँ।

छायादार जगह मे 4–5 दिन तक रखें। थोड़ा पानी डालकर दो दिन मे एक बार अच्छे से मिला लें ।

खेत में जुताई व पोधें रोपण के पूर्व 50 किलोग्राम जीव भरपूर फार्म यार्ड मेन्यूर(गोबर खाद) को एक 1 एकड़ जमीन मे समान रूप से फैला दें ।

दस दिन के अंतराल पर बाइयोकोन्सोरर्शिया को खड़ी फसल की मिट्टी मे मिलावट कर प्रयोग करना चाहिए ताकि प्रभावी ढंग से रोग की रोकथाम हो सके ।

2) बीज उपचार:

बीज मे मिलाने के लिए घोल को तैयार किया जाता है। 10 ग्राम बाइयोकोन्सोरर्शिया के साथ एक लीटर पानी को मिलायें । यह घोल 1 किलोग्राम बीज मे मिलाने के लिए पर्याप्त है । बीज को बाइयोकोन्सोरर्शिया से उपचारित करने के 30 मिनट बाद बोवाई के काम में लाना चाहिए ।

3) पौधो में मिलाना:

पौधों मे मिलाने के लिए 500 ग्राम बाइयोकोन्सोरर्शिया को 5 लिटर पानी मे मिलाकर घोल तैयार किया जाता है।

पौधों को खेत मे ट्रांसप्लांट करने से पूर्व पौधो की जड़ो को ऊपर बनाये हुए धोल मे 30 मिनट तक डुबाकर ही इस्तेमाल करें।

4) पत्तियों पर छिड़काव:

पत्तियों पर छिड़काव करने के लिए 100 ग्राम बाइयोकोन्सोरर्शिया को 10 लिटर पानी मे अच्छे से घोल कर खड़ी फसल की पत्तियों में, फूलों तथा फलों पर छिड़काव करना चाहिए।

बीमारी से बचने के लिए इस घोल का 10–15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करते रहना चाहिए।

बायोकन्सोरशिया के फायदे

- सब्जियों मे उखटा रोग का जैविक नियंत्रण बाइयोकोन्सोरर्शिया के प्रयोग से कम खर्च मे हो सकता है।
- फसल अवधी के दौरान इसके प्रयोग से फसलों को सुरक्षा प्रदान होती है तथा यह जैविक कृषि (खेती) के लिए भी लाभकारी है।
- बाइयोकोन्सोरर्शिया, फफूंद व बैक्टीरिया के द्वारा होने वाले अन्य रोगों के लिए भी असरदार है।
- यह मिट्टी, पौधों तथा उपयोगी जीवों के लिए भी सुरक्षित है।